घिरे हैं हम सवाल से

(संवेदन कल्चरल प्रोग्राम का नाटक))

पात्रः सूत्रधार, अ= आदिवासीओं का प्रतिनिधी और समूह

दृष्यः 1.

मंच के उपर अ और समूह पारंपरिक आदिवासी नृत्य में रत हैं। कुछ समय तक चलता रहेगा। तब इस दृष्य को भंग करता हुआ सूत्रधार दौड़ता हुआ प्रवेश करेगा।

सूत्रधारः सबूरे! यह सब क्या हो रहा है? इस वक़्त हमारे सामने, तुम्हारे सामने इतने सारे सवाल खड़े हैं, फिर भी तुम लोग यूं?.... सबूरे! 21 सदी शुरू हो चुकी है, और तुम... ये सब?....
(नृत्य–संगीत थम जता है। सारे लोग सूत्रधार के सामने सवालिया निगाह से देख रहे हैं)

सूत्रधारः (दर्शकों से) आप जानते हैं। सबूरा कौन है? सबूरा –इस सृष्टी की पहली संतान। इस धरती की अंधेरी कोख़ को चीर कर पैदा हुई, ज़िन्दगी की पहली रोशनी। घने जंगलों के बीच, काली गुफ़ाओं की गोद में, अपने चार पैरों में से दो पैरों पर खड़ी होकर , सीधी हुई रीढ़ की पहली हड्डी सबूरा पहला इन्सान। सबूरा आदि मानव। सबूरा आदिवासी।

(समूह उत्क्रांति के सोपान की मुद्रा में। बाद में पहले की तरह पारंपरिक नृत्य गीत शुरू) (कुछ पल यह चलता है फिर आदिवासियों का प्रतिनिध अ आगे आता है)

अः हमने समाज को बनाया। ज़मीन को संवारा। धान उगाया। इन्सानों की जिन्दगी को सजाया। कुदरत हमारी थी, हम कुदरत के थे। कुदरत के साथ साथ जीना जानते थे हम। कुदरत के बीच खुश थे हम।

सूत्रधारः बेशक! पर समय आगे बढ़ता गया। बदलता गया। तुझे भी समय के साथ चलना था। बदलना था। पर तू सिमटता गया। तेरा पूरा समाज सिकडुता गया। क्यों?

अः हमारी कुदरत पर, कब्जा जमाने के लिए कई लोग आये.... बाहर से।

1: बाहरवालों की भूख ने हमारी कुदरत को निगला। खूब निगला।

2: हम तो अपने आप में खुश थे, संतुष्ट थे।

3: कुदरत हमारी हर इच्छा को पूरा करती थी।

सूत्रधारः या फिर.... और कोई महेच्छा ही नहीं थी तुम्हें?
(कुछ पल समूह का निरुत्तर हमींग)

अः थी। पर हमारी महेच्छा को कुचल दिया, तुम्हारी सभ्यता के इतिहास ने।

सूत्रधारः और तुम.... दबते गये। कुचलते गये। इसी लिए तुम्हें कथाओं में, गाथाओं मे डरा हुआ, हारा हुआ दिखा गया – कभी एकलव्य की तरह, कभी वाळी की तरह, कभी मयदानाव की तरह तो कभी शंखासुर की तरह!

अः हां, हमसे हमेशा कुछ न कुछ छीनता रहा।

1. कभी हमसे हमारा राज्य छीना गया।
2. हम से हमारा कौशल्य छीन लिया गया।
3. कभी हमें आधे इन्सान और आधा जानवर बनाया गया।
4. हमें डरावना बताया गया।
5. हमें हिंसाखोर बताया गया।

अः और हम..... सिमटते गये, अंधेरे जंगलों में, बीहड पहाडों में.... हमारे रिश्ते कटते गये, आगे बढ़ती हुई मानव सभ्यता से।

(2)

(इसके अनुरूप मुद्राएँ और हमींग चलेगा)

अः .... और इस तरह हमारे अस्तित्व को पुराणयुग में नकारा गया। फिर जब इतिहास युग आया तब तक हम राजा–रजवाडों के दास बन चुके थे। अपनी सेवा करवाने के लिए उन्होंने हम को साधा और अपने मनोरंजन के वास्ते हमारे जंगलों, पर्वतों पर सेंध लगाई।

A) राजारजवाड़ों के डोला उठाते आदिवासी। हमींग।

B) राजा शिकार करने आते हैं तो जंगलों में 'हाका' लगाते हुए – लात खाकर बाघ–भालू का शिकार बनते हुए आदिवासी।

सूत्रधारः और तुम.... बन गये दास.... गुलाम....। (द्रृश्य बनते हैंः)

(3)

सूत्रधारः फिर भी तुम सब्र करते रहे सबूरे?! मुझे पता हैः उसके बाद जब ज्ञान विज्ञान युग आया तब फिर से एक बार तुम्हारे वजूद पर अंधेरा छाने लगा– नये सिरे से।

अः वैसे तो हमारा ज्ञानविज्ञान हमारे पास भी था।

1ः पर बिजली से डरते थे हम।

2ः पानी मे वैसे तो तैरते थे... पर डूबते भी थे हम।

3ः आग से हम सेंकते थे, भूनते थे, पकाते थे..... पर जलते भी थे हम।

सूत्रधारः और उधर.... बाहर की दुनिया में, आग गाड़ी बनी। बिजली से रोशनी हुई। कल–कारखाने बने। बाहर की दुनिया समृद्ध होती गई... और तुम?

अः हम कंगाल होते गये। क्योंकि बाहरवालों ने अपनी समुद्धि के लिए हमारा उपयोग किया। उन्हें आबादी मिली– हमें बरबादी।

1. हमारे जंगल उनकी रेलपटरियां बनें
2. हमारे परबत उनकी खनीज़ संपत्ति बनें।
3. हमारी जमीन उनके उद्योग बनी।
4. हमारी कुदरत उनके विकास के लिए नष्ट होती रही।
5. जंगल का कानून बनाया गया..... पता नहीं– किसके लिए!!!

(अनुरूप द्रृश्य बनेंगें)

A

(कुछ आदिवासी पुरूष लकड़ी काट रहे हैं। दूर से रेन्जर की सीटी की आवाज़ आती है। आदिवासी कुछ सहम जाते हैं, पर लकड़ी काटना ज़ारी रखते हैं। तब लाठी लिये हुए रेन्जर आता है:)

रेन्जरः क्यों बे? सरकारी पेड़ को क्यों काटते हो? गैरकानूनी है।

1: साब, घर के वास्ते लकड़ी चाहिये। और कहां जाउं? आख़िर जंगल तो हमारे ही हैं... सो... (काट लिया– मुद्रा से)

रेन्जरः साले! शाणा बनता है? जंगल तुम्हारे हैं या सरकार के?! (डंडा जमाता है) बोल, साले! हक जमाता है? चोट्टा कहीं का। अंदर कर दूंगा। हां... ला– कुल्हाड़ी ला.... {छीन लेता है, डंडा जमाता है, लोग डर के मारे भाग जाते हैं।) (अनुरूप हमींग)

B

(कुछ आदिवासी महिलाएँ गीत गाते हुए जमीन पर बिखरे महुआ और फूल बीन रही है)

महिलाएंः चारों ओर बिछी है चदरिया –महुआ की
आ गई है रूत सख़ीयाँ –महुआ की
महुआ ही खाना है, महुआ ही पीना है
अपनी तो दुनिया है, महुआ की!

(तब रेन्जर सीटी बजाता हुआ आता है ज़रा सावध होके औरतें अपना काम जारी रखती है)

रेन्जरः क्यों री? ये महुआ तुम्हारे बाप का है? जानती नहीं, महुआ बीनना गुनाह है?

1: लो जी! जंगल हमारे, पेड़ हमारे और जरूरत भी हमारी।

2: हम महुआ नहीं बीनेंगें तो कैसे जियेंगें?

3: इसी को बेचते हैं, इसी से पेट भरते हैं।

रेन्जरः चुप बे! ज़बान लड़ाती है? फ़ेंक दे.... महुआ फेंक दे। (उनकी टोकरियाँ छीनता है। उंगली करता है। लालसासे देखकर शरीर छूता है।) (औरतें चीखती हैं, पर आखिरकार कोसती हुई भागती है)

1: मुए... तू जो चाहे कर लें.... हम महुआ लेंगें ही लेंगें....

2: अरे... महुआ तो माईबाप है हमारे....

रेन्जरः साली... हरामजादी... चोट्टी.... तेरी तो.... {कहता हुआ उनके पीछे भागता है}

———000———

अः बाहरवालों के लिये... हम जैसे लबालब भरे हुए तालाब थे। वे हमें चूसते गये.... खाली करते गये। यही था मतलब.... जंगल के कानून का।

सूत्रधारः और फिर भी तुम?! तुम सब्र करते रहे, सबूरे? तूने कभी सामना नहीं किया?

अः नहीं.... हमने संघर्ष किया था। उस घिनौनी, लालची गोरी (अंगरेजी)सरकार के सामने हम लड़े थे।

(तब कुछ लोग एक एक वाक्य बोलते हुए अलग अलग स्पोट पर जायेंगें और वीर का पुतला बनकर हाथें मे तीर कमानवाली मुद्रा में खडे होंगें। बाकी लोग सूत्र बोलकर जय जयकार करेंगें। जैसे.... 'हमारी हिरावल जिन्दाबाद, जिन्दाबाद। शहिदों अमर रहो।)

1: बिरसा मुंडा, तिलका मांझी, रीड़ो मांझी। (सूत्रः जिन्दाबाद, जिन्दाबाद)

2: चकरा बिसोई, डेरा बिसोई (उपर की तरह)।

3: मोतीलाल तेजावत, बुधन साबर, तातिया भील....(उपर की तरह)

4: सब लड़े थे.... जंगल के अधिकार के लिए....

5: अंग्रेजों की गोली से मरे थे.....

6. फाँसी के तख़्त पर चढ़े थे....।

7: पुलिस थानों में दम तोड़ा.....।

8: जेलों में ख़तम कर दिये गये....।

सभीः उलगुलान.... उलगुलान.... उठो..... बदलो.... उलगुलान.....

सूत्रधारः उन वीरों का इतिहास थोड़ा बहुत तो हमें भी जानते हैं। पर सच बता सबूरे! क्या शहर के चौराहों पर पुतले रखने से उन वीरों की विरासत को सार्थकता मिल पायेगी? क्या तुम्हारे बच्चे इन वीरगाथाओं को जानते हैं?

(शर्मिन्दगीवाला हमींग)

अः तुम ठीक कह रहे हो शायद.... पर उस जमाने में कहीं न कहीं उन वीरगाथाओं को गुम कर दिया गया था। हमारे वजूद को तरह तरह की भूलभूलैयाँओं में भूलाया जा रहा था। जैसे... हमारा काई अतीत ही नहीं था! तब से लेकर अब तक खतरा ही खतरा है हमरी पहचान पर!

सूत्रधारः (तीख़ेपन से) पहचान का ख़तरा तो जैसे आज की दुनिया का सब से बड़ा सवाल हो चला है! क्या भूख, गरीबी, बेरोज़गारी, ज़हालत, असमानता के सवालों को हमने हल कर दिया हैं? बस... धर्म, कौम, जाति, भाषा, प्रान्त–प्रदेश, संस्कृति खतरे में आगये.... हूंह! (यहां तीखेपन से यह कहा जा रहा है तब लोगों द्वारा एक नई संरचना हो रही है।

अः (आक्रोश युक्त हमींग के बाद) हम आदिवासी है। यही हमारी पहचान है।

(5)

(समूह में से कुछ लोग पेड़ों की तरह, हाथ फ़ैला कर खड़े होते हैं। उनके सामने कुछ लोग अपनी आंखों में धिक्कार भर कर, हमला करने की मुद्रा में आ कर कोसना शुरू करते हैं। यह सुनते हुए, पेड़ बने लोग झुकते जाते हैं और आखिर में ज़मीन दोस्त हो जायेंगें)

(धिक्कार करनेवाले लोग कहेंगेः)

1: तुम आदिवासी! साले, चोर–उचक्के!

2: आलसी.... अजगर जैसे!

3: हरदम शराब में धूत!

4: जंगली... गँवार!

5: गुफ़ावासी.... बंदर!

1: पिछड़े हुए... पथ्थरों को पूजनेवाले.... अंधविश्वासी।

2. बुद्धु कहीं के.... न भाषा, न साहित्य, न संस्कार!

3. अधनंगों! कपड़े तो पहनो!

4. तुम्हारी औरतें.... धडल्ले से घूमती है.... खेत भी जोतती है! वाह.... क्या समझती हैं अपने–आप को!

5. तुम्हारी कोई नीतिरीति है या नहीं?

1. डरपोक! बाहर की दुनिया में सिट्टिपिट्टि गुम।
2. तुम जैसे नंगें–भूखे इस धरती पर बोज़ हैं बोज!

(पूरे दृश्य को देखकर व्यथित–विचलित हो जाता है। कटे हुए पेड़ों के बीच घूमता है)

अः देखा? हम आदिवासीः पेड़ों की तरह पनपते हैं और पेड़ों की तरह मुरझातें हैं। हमें काटने के लिए कुल्हाड़ी की जरूरत नहीं.... बस कोसो, गालियाँ दो, अपमानित करो– हम सूखकर ठूंठ हो जायेंगें। तुम– बाहरवाले ये ही कर रहे हो हमारे साथ।

सूत्रधारः मैं जानता हूँ। पर हमें दोषी ठहराने से तुम्हारे सवाल हल नहीं होंगें।

अः तुम लोगों ने इतना ही नहीं, बहुत कुछ किया है हमारे साथ। तुम्हारी सद्इच्छाओं के नाम पर..... मानवता के नाम पर।

(हमींग के साथ.... दृश्य बदलता है)

(6)

A

आदिवासियों का समूह अपने श्रम में व्यस्त है। तब सामने से एक महिला और पुरूष उनकी ओर 'रघुपति राघव' गाते हुए आते हैं। समुदाय उन्हें आश्चर्य से देख रहा है। आ कर, वे दोनों आदिवासीओं को देखकर, गंदे बच्चों को देखकर माँओं का जो भाव बनता है, उस तरह नाक–भौं चढ़ाते हैं। फिर कुछ आदिवासीयों को वे नहलाने का, बाल संवारने का, अपने जैसे कपड़े पहनाने का अभिनय करेंगें। फिर आलथीपालथी मारना सिखाकर तकली–चरखा सिखाते हुए, छोटे गीत सिखाते हैं।ः

(1)

साफ़–सुथरा अंगना, साफ़ सुथरे अंग
सफ़ाई होवे सर्वदा, तनमन तन्दुरूस्त

(2)

छोड़ दो, छोड़ दो, छोड़ दो, रे!
इस शैतानी शराब को छोड़ दो रे!

(फिर ओम शांति शांति शांति करा कर.... वैष्णवजन की धून गँवायेंगें। तब एक कोने पर खड़ा अ, सूत्रधार से तीख़ेपन से पूछेगाः)

अः क्या ये ही सभ्यता है? क्या आप हमारी संस्कृति को संवारने आये थे या अपने संस्कारों को हम पर थोपने?!

B

(समूह नयी संरचना करेगा– फिर वही अपने अपने श्रम का अभिनय। तब एक 'फ़ादर' और एक 'सिस्टर' का प्रवेश। जो उन्हें घूटने टेकना, क्रूस बनाना सिखाते हैं। पवित्र जल छिड़क कर, पिता–पुत्र और पवित्र आत्मा' की जयजयकार कराते हैं। क्लास लगाकर A-B-C पढ़ाते हैं। अंग्रेजी गीत सीखाते हैंः)

(1)

बा.... बा.... ब्लेकशिप। हेव यू एनी वूल?
यस सर.... यस सर... थ्री बेग्स फूल!
(ख्रिस्ती भजन की हमींग)

अः फिर से वही सवाल!!! हमारे उपर एक के बाद एक प्रयोग होते रहे। हम जैसे प्रयोगशाला के चूहे हों.... इन्सान नहीं!

1. जैसे मिट्टी के लौंदे। जिस सांचे में ढालो, ढ़ल जायेंगें....
2. कभी ये– कभी वो! सुबह में कुछ–शाम में कुछ और.... और रात में!!!
3. सही या गलत? क्या सही? क्या ग़लत?
4. हर बार अपनी पहचान ढूंढने की चाह में....
5. हर बार अपने आप को खोते गये.... गंवाते रहे....
6. कौन थे हम? क्या है हम?

अः वैसे तो हम अपने आप को भील, गामीत, वसावा, चौधरी, धोडिया, काथोडी, कोटवालिया, तड़वी, पाड़वी, सांथाल, गोंड, मुरिया, ओरांव, शबर कहते हैं...पर हम बँट गये हैं.... बिखर गये हैं... और भी!

(7)

सूत्रधारः तुम क्या ढूंढ रहे हो? अपनापन? अपनी पहचान? क्या वह मिल जाने से तुम्हारे सब सवाल हल हो जायेंगें?

अः अभी मेरी बात ख़त्म नहीं हुई।.... और फिर आ गई आज़ादी.... इस देश में।
(आदिवासी मूढ़वत् जनगणमन का हमींग)

अः .... और ये कैसी आज़ादी है? किस के लिये है आज़ादी?

1. हमें हमारे जंगल वापस मिल जायेंगें?
2: क्या पर्बतों पर हमारा हक वापस मिलेगा?
3: क्या हमारी नदियां हमारी ही रहेगी?
4: जंगल के कानून बदल जायेंगें?
5. ज़मीन जोतने का हक़ मिलेगा हमें?
6. हम जैसे थे वैसे ही रहेंगें या आबाद होंगें?

अः इस आज़ाद देश ने नये सपने देखना शुरू किया....

सूत्रधारः पूरे देश ने नहीं! आज़ाद देश के कुछ मुट्ठीभर लोगों ने!
(नेता की सभा के दृश्य की संरचना बनेगी)
(आदर्शवादी नेता का संबोधन)

नेताः मेरे प्यारे देशवासियों। अब हम आज़ाद हैं। हमारा देश प्रगति की राह पर चल पड़ा है। नये उद्योग....नये कल–कारखानें, फेक्टरियाँ, बांध, नहर योजनाएँ ही होंगें हमारे नये तीरथ, नये धाम। बिजली, पानी, पक्के रोड़, पक्के मकान, खुशहाली और आबादी... सबके लिए होगी। देश के कोने कोने तक विकास पहूँचेगा। (तालियाँ) पर हमें, इस राह पर आप का साथ चाहिये। आप सब धरती के लाल हैं। जंगलों के धनी हैं। हमें आप अपनी थोड़ी सी ज़मीन दे दें। आबादी आप के कदम

चूमेगी। हम आपके सामने झोली फ़ैलाकर खड़े हैं। अपने महान देश के महान भविष्य के लिये बस, इतना सा बलिदान दे दीजिये। जय हिन्द।

(तालियाँ। एक के बाद एक हाथ उठाकर, आदिवासी अपनी ज़मीन देने की सम्मति देते हैं)

अः अलबत्ता, फिर देश आबाद होता गया और हम उजड़ते गये। उख़डते गये।

(विषादयुक्त हमींग के साथ साथ, जैसे अपने घर कंधो पर लादकर आदिवासी अलग अलग दिशा में बिखरने लगते हैं।)

सूत्रधारः (आंख पर हाथ रखकर, दूर कुछ ढूंढने की मुद्रा में) सबूरे.... कहां हो तुम?

(लोग अलग अलग जगहों से कहेंगें)

1: अब हमारी ज़मीन पर डेम बन गया है। मैं वहीं पर, किसी और के खेत में गन्ना काट रहा हूँ। दिहाड़ी करता हूँ।

2: मेरी ज़मीन पर फौलादी नेता का सुनहरा सपना साकार हो रहा है। मैं विकास योजना का मज़दूर हूँ।

3: हमारे पर्बत अब ख़दान बन चुके हैं। मैं धरती का लाल –अब धरती के नीचे, काले कोयलों में दबा हुआ हूँ।

4: मैं रेलपटरियां बिछा रहा हूँ। सारे देश में घूमता हूँ।

5: अरे, मैं तो शहर में ही बस गया हूँ। औरों के लिये घर बनाता हूँ।

6. मेरी घरवाली औरों के घर में काम करती हैं और....

7. मेरे बच्चे रेल्वे स्टेशनों पर भीख मांगना सिख रहे हैं।

अः हम.... टूट रहे हैं – बिख़र रहे हैं – लुट रहे हैं – डूब रहे हैं – मर रहे हैं.... आज़ाद देश के महान विकास में....

(समूह अंतिम शब्द दोहरायेगा– "आज़ाद देश का महान विकास..." किसके लिए?)

सूत्रधारः सबूरे! तुझे क्या मिला इस आज़ादी से?!

अः हम अब वोट दे रहे हैं, और वोट मांग भी रहे हैं.... इस आज़ाद देश में।

(अनुरूप हमींग)

(8)

अः आज़ाद देश में.... इस आज़ाद देश में....

1: हम अब वोट दे रहे हैं... बाहरवालों की तरह!

2: हमारे बच्चे शहरों मे पढ़ रहे हैं –अंग्रज़ी मीड़ियम में।

3: हम शहरों में नौकरी कर रहे हैं.... शहरों मे ही रह रहे हैं– बाहरवालों की तरह।

4: हम– महिलाएँ कितनी आगे बढ़ रहीं हैं... महिला मंडल बना रहीं हैं.... स्वसहाय जूथ बना रही हैं.... बाहरवालीयों की तरह।

5: अब मेरे ही घर की बात लो.... मेरी घरवाली को हमने सरपंच बनाया है, और मैं उसकी हर कदम पर सहाय कर रहा हूँ। बाहरवालों की तरह।

6: इतना ही नहीं, हमारे गांव में हमारा शासन हैं.... आदिवासी स्वशासन।

7: हमारे अपने लोग दिल्ली तक पहूँच चूके हैं। संसद में बैठ रहे हैं।

सूत्रधारः हां.... मगर उधर गांवों में तुम्हारे भाई अभी भी मक्के के दानों के बदले में, नमक और माचीस पाते हैं– मंगलवारी हाटों में। तुम्हारे बच्चों की पढ़ाई गांव की सीमा तक ही पहूंच पाती है क्योंकि हाईस्कूल नहीं है उधर।

1: हां... यह भी ठीक कहा.... बस भी कहाँ हैं गांव में?!

2: और पीने का पानी लेने तो हमें अब भी तीन तीन कोस दूर तक जाना पड़ता है।

3: और हमारे गांवों का अंधेरा जस का तस है –हजारों सालका बूढ़ा अंधेरा....

4: हमारी औरतें माँ बनने से पहले ही बच्चे गंवाती हैं.... दवाखानों के अभाव में....

5: आज़ाद देश में.... आज़ाद देश में.....

(तब '6' आता है, तिलमिलाकर अपने लोगों से)

6. अरे, तुम लोग इसकी(सूत्रधार की) बातों में आ गये? यह तो बहका रहा है तुम्हें! (सूत्रधार से) और तुम.... बाहरवाले.... हमारी कमजोरियों को ही देख पाते हो?!

सूत्रधारः (सस्मित.... अ से) सबूरे..... यह कौन?

अः यह हमारे नेताजी हैं। हमारे ही समाज के हैं। हम लोगोंने इन्हें चुन कर मंत्री बनाया है।

सूत्रधारः ओ हो.... तो यह वही है, जो हज़ारों की संख्या में तुम लोगों को जंतरमंतर पर धरना, रेली लगाना सीखाया करते थे?! (अ नतमस्तक)

6: क्यों, तुम बाहरवालोंको उस में भी एतराज़ है?! सच पूछो तो यह तुम्हारेवालों से हम सिखे हैं। पिछले साठ सालों में तुमने जो ढांचा सेट कर रखा है; उसी में हम फ़ीट हो रहे हैं।

सूत्रधारः (अ से) फिर भी सबूरे! जब कोई तुम लोगों में से उभर कर आगे आता है तो उसकी ज़िम्मेदारी कुछ अधिक नहीं होंगी?!

6: चुप रहो। हम अपनी जिम्मेदारी खूब समझते हैं। तुम बाहरवालों को हम से जलन हो रही है। हमने हमारी अपनी सत्ता बनाने के सफल प्रयास किये हैं– वह नहीं देख रहे हो तुम? अरे, हमने ही तो छत्तीसगढ़ बनाया, झारखंड की रचना की और अब तो हम भीलखंड भी बनानेवाले हैं।

(लोग उत्साह से 'छत्तीसगढ़, झारखंड और आदिवासी–शासन ज़िन्दाबाद' के नारे लगाते हैं।)

सूत्रधारः सबूरे.... ज़रा सोच! क्या सचमुच वहां तुम लोगों की सत्ता चलती है? अरे, पहले तेरे जंगलों को काट कर वहां अभयारण्य बनाये गये। इन्सानों को ख़देड़ कर बाघ–भालू–तोते–तितर को सुरक्षा दी गई। फिर पर्बतों पर बड़े बड़े उद्योगपतियों ने कब्ज़ा ले लिया। सर्वनाशी शस्त्र बनाने के लिए तेरी खनीज़ को हड़प लिया। तेरी नदियां बिक गई। सबूरे.... समूचे बाज़ार ने ख़रीद लिये हैं यह तेरे गढ़ों और खंडों को और तुम्हारे लोग वहां जीते हैं या तो गुलाम बन कर, या फिर दल्लाल! नेताजी, तुम्हारी कुर्सी के पीछे जो बिदेसी लेबल लटक रहा है... वह पढ़ पाते हैं आप? और तुम लोग.... जानते हो इस कुर्सी की कीमत?

(शर्मिन्दा हमींग)

(9)

अः लगता है, हमारी पहचान अब कुछ कुछ साकार हो रही है। अब हम मुख्यप्रवाह में आ रहे हैं। सुसंस्कृत बन रहे हैं।

सूत्रधारः क्या कहा तुमने? मुख्यप्रवाह? सु–संस्कृत? मतलब?

अः मतलब यह कि अब बाहरवाले हमें अपने साथ ले रहे हैं। संस्कृति की शिक्षा–दीक्षा ले रहे हैं हम।

सूत्रधारः किसकी संस्कृति?

अः हमारे महान राष्ट्र की महान संस्कृति। इस राष्ट्र की प्राचीन परंपरा की शिक्षा दे कर हम वनवासीओं के जीवन संवार रहे हैं ये लोग।

सूत्रधारः (व्यग्र) पर तुम तो आदिवासी हो, मूलनिवासी हो सबूरे। सिर्फ वनवासी बन कर रहोगे?

अः हां.... हमारी पहचान की शोधयात्रा शुरू हो चुकी है।

1: इसी शोध ने हमें राम–जानकी यात्रा में शामिल किया....

2: राम–इंटा इकट्ठा करने में और उधर मंदिर तक पहूंचाने में भी हमें साथ साथ लिया गया....

3: रामरथ–यात्रा में सोमनाथ से अयोध्या तक जाने में भी हम थे।

4: डांग जिले में, शबरी कुंभ का आयोजन ख़ास हमारे लिये हुआ।

5: वहीं पर कुन्तीमाता का मंदिर हमींने बनाया।

6. ओरिस्सा का बिल्वेश्वर महादेव का धाम भी हमींने बनाया, स्वयं हमारे लिये।

7: धीरे धीरे हमारा आत्माभिमान बन रहा है.... हमें सम्मान मिल रहा है।

8: अब हमारे बच्चों के नाम कालू–भोलू–फूली–पूंजी नहीं रहे। उन्हें अब नये नाम मिल रहे हैं –कमलेश–भाविन्–पूजा–प्रतिमा....

9: हम गुरूकुलों में पढ़ रहे हैं। स्वाध्याय कर रहे हैं। गीता–पाठ कर सकते हैं। सुनो....

स्वधमें निधनं श्रेष्ठ
परधर्मो भयावाह....

सूत्रधारः यह कौन सी पहचान पायी है तुमने सबूरे? यह कैसा धर्म पाया है... जो दूसरों की हत्या करवाता है? जहां त्रिशूल तलवार की दीक्षा मिलती है?

अः नहीं, यह तो हमारी घरवापसी है। अपनी जड़ों की खोज शुरू की है हमने। सही अर्थों में पा रहे हैं। हम हमारा गौरव.... हमारी अस्मिता।

सूत्रधारः सबूरे..... सच तो यह है कि अब तुम्हें 'टोला' बनया जा रहा है।

सबः टोला?

सूत्रधारः हां, टोला। डांग में, साबरकांठा में, पंचमहाल में, कालोल, हालोल, कवांट तक.... बड़ौदा और नरोडा पाटिया के लिए तुम्हें टोला बनाया गया। उन चालाक लोगों के हाथों के हथियार और हत्थे बन गये तुम। उधर कंधमाल में भी तुम्हें तलवार–बंदूक बनाया गया।

अः नहीं.... हथियार से तो हमारी संस्कृति की रक्षा होगी.... परायों से हमारी सुरक्षा होगी।

सूत्रधारः कौन अपना? कौन पराया? याद कर सबूरे! तुम्हींने कहा था.... कभी एकलव्य बनाकर तो कभी वाली बनाकर इन्हीं संस्कृति–परंपरा ने तुम्हारा सब कुछ छीन लिया था.... आज तुम्हें वही.... वहीं संस्कृति, वही परंपरा तुम्हें अपने लगते हैं? इन लोगों ने तेरी आंखों पर पट्टी बांध के फिर से एक नई भूलभूलैया में धकेला है। सोच ले.... सबूरे!

अः नहीं, हम वापस लौटना नहीं चाहते।

सूत्रधारः वापस लौटने की बात नहीं है, तुम्हें तो आगे ही बढ़ना होगा।

(10)

(अ के नेतृत्व मे समूह 'भारत माता की जय' करते स्पोट रनींग करने लगता है।)

अः लो हम बढ़ रहे हैं आगे.... आगे ही आगे... (सूत्रोच्चार चालू)

सूत्रधारः रूको। (सूत्र बंद) जरा अपने पैरों की और देखो। अपने लहू से रंगें हाथों को देखो। आगे बढ़ रहे हो तुम? क्या तुम्हें इस रास्ते पर दूर दूर तक.... नज़र आ रही है.... समानता? जंगल जमीन पर अधिकार? गुलामी से मुक्ति?

अः (सोचते हुए) पता नहीं.... पर ये रास्ता अच्छा लगता है.... शांति मिलती है.... इस तरह....

सूत्रधारः बिना संघर्ष के शांति कैसी?

अः संघर्ष किया भी है.... और आज भी कर रहे हैं... उधर.... छत्तीसगढ़ में..... झारखंडमें....

(कोरस एक एक मुद्रा बनाते है)

1. मैं लड़ रहा हूँ.... तीर कमान से...
2. और मैं गुलेल से....
3. मेरे पास तो बंदूक भी है....
4. हमारे पास उपवास का शस्त्र भी है.....

सूत्रधारः सबूरे..... तेरे ये हथियार 21वीं सदी में कैसे काम आयेंगें?

अः क्यों नहीं आयेंगें?

सूत्रधारः तू देख नहीं रहा.... तेरे और तेरे जैसे सब गरीबों.... शोषितों का दुश्मन खून की एक बूंद भी गिराये बिना तुम्हें और तुम्हारे जेसे लोगों को खत्म कर रहा है?

अः हमें गलतफहमीं में मत डालों। हमारा कितना खून बहा हे और आज भी बह रहा है.... वह हम ही जानते हैं। ये तुम्हारा जंगल खाता, ये तुम्हारी पुलिस.... ये तुम्हारे जंगल के ठेकेदार.... ये बड़े बड़े तम्हारे उद्योगपति.... क्या कर रहे हैं वह हमारे साथ?

सूत्रधारः मैं जानती हूँ.... पर वे सब जो कर रहे हैं.... कानून का सहारा लेकर कर रहे हैं.... बाज़ार के नियमों से कर रहे हैं। क्या तेरे हथियार कानून और बाजार से लड़ पायेंगें? क्या वे पूरे समाज की सोच को बदल पायेंगें?

(अ चूप. सोचता है)

सूत्रधारः सबूरे.... तेरी आज तक की लड़ाईयों से तुझे क्या मिला है? नक्सलवादी नाम की गाली.... शहादत नहीं एन्काउन्टर.... और सलवा जूडुम जैसी तुम्हें ही तुम्हारे खिलाफ लड़ानेवाली दमनकारी व्यवस्था. ... या और कुछ?

अः हम मौत से डरनेवाले नहीं है।

सूत्रधारः पर सवाल जिन्दा रह कर संघर्ष करने का है... सबूरे। नया संघर्ष।

अः नया संघर्ष?

सूत्रधारः हां.... नया संघर्ष। तुम्हें नहीं लगता तुम जो लड़ाई लड़ रहे हो वह सिर्फ तुम्हारे ही लोगों के लिये है... ? सिर्फ तुम्हारे ही सवालों के लिये है? क्या उससे समूचे समाज की सोच, ये आज के कानून, ये बाज़ार की व्यवस्था.... ये सब खत्म होंगें? उधर देख.... वे हज़ारों साल से समाज के अत्याचार झेल रहे दलित, वे... सदियों से शोषित नारी.... वे जान बचाने के लिये अपनों के बीच में ही लाशों के ढ़ेर में पड़े मुसलमान, ईसाई.... वे आत्महत्या करते किसान.... वे दिहाड़ी ढूंढते ढूंढते ही जिन्दगी गुजारते मजदूर...। क्या तुम्हें इन सब के साथ जुड़कर नहीं लड़ना चाहिये?

अः पर पहले मेरे सवालों की लड़ाई तो खतम हों।

सूत्रधारः क्या तेरे और इन सब के सवाल अलग अलग हैं?

अः हां। मैं आदिवासी हूँ.... वे आदिवासी नहीं हैं। मुझे अपनी पहचान चाहिये।

सूत्रधारः मैं मानती हूँ। तुम्हें सब से पहले तुम्हारी पहेचान और गौरव मिलना चाहिये। पर क्या उसीसे तुम्हें सबकुछ मिल जायेगा.... जो तुम्हें चाहिये?

अः पता नहीं.... शायद तुम ठीक कह रही हो.... हमें सिर्फ हमारी लड़ाई से सबकुछ नहीं मिल सकता और गरीबों, शोषितों के साथ मिलना होगा.... पर कैसे मिले....? कैसे करें नया संघर्ष...? कैसा होगा नया संघर्ष....?

सबः सवाल है..... सवाल है..... सवाल के जवाब है? घिरे हे हम सवाल से..... हमें जवाब चाहिये.....

————0000————

– सरुप ध्रुव

2–1–2009.